एक एहसास...

Hunny Gupta

Sample Copy Not For Distribution.

एक एहसास...

Sample Copy Not For Distribution.

Publishing-in-support-of,

EDUCREATION PUBLISHING

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.educreation.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 978-1-61813-898-9

Price: ₹ 165.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Educreation.

Printed in India

Sample Copy Not For Distribution.

एक एहसास...

हन्नी गुप्ता

EDUCREATION PUBLISHING
(Since 2011)
www.educreation.in

Sample Copy Not For Distribution.

Sample Copy Not For Distribution.

सप्रेम नमस्कार,

यह "*नोवेल*" मैंने तब लिखना शुरू किया, जब मैं घर से दूर अकेला था। इस "*नोवेल*" में मैंने एक ऐसे बच्चे की छोटी सी झलक, उसके बाल्यावस्था से लेकर उसकी युवा अवस्था तक वह सब छोटे–छोटे प्रसंग के साथ प्रस्तुत करने की कोशिश की है, जो शायद इस "*नोवेल*" में प्रस्तुत, हर छोटे–छोटे अंग हर किसी की कहानी से जुड़े हुए हैं। मैंने इस "*नोवेल*" में ऐसे कई 'एहसास' प्रस्तुत किए हैं, जो एक आम नागरिक बचपन से अपनी आयु के अलग–अलग पड़ाव में महसूस करता है। इस "*नोवेल*" के जरिए मैं उन सभी नौजवानों को एक संदेश देना चाहता हूं कि व्यक्ति को कभी भी जीवन में हार नहीं माननी चाहिए। उसे अपने जीवन में थक्कर नहीं बैठना चाहिए। कामयाबी का रास्ता हर किसी के पास होता है, बस जरूरत होती है उस रास्ते को तराशने की। इस "*नोवेल*" में मैंने उन छोटी–छोटी बातों को प्रस्तुत किया है, जो हर कोई समझता है, पर उन गद्यांश, उन वाक्यों, उन मिसालों का इस्तेमाल हर कोई नहीं करता।

इस नोवेल के जरिए मैंने उन हर एहसास की चर्चा की है, जो हर व्यक्ति, हर युवक–युवती अपने जीवन काल में महसूस करते है।

Sample Copy Not For Distribution.

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पेज नं.
1.	दुःखो का एहसास	1
2.	लोगों के अच्छे व बुरे होने का एहसास	4
3.	दोस्ती करने और निभाने का एहसास	8
4.	दोस्तों के साथ जिंदगी जीने का एहसास	11
5.	भूख और गरीबी का एहसास	13
6.	एक पड़ाव	17
7.	माता–पिता से मिलने का एहसास	19
8.	मौज–मस्ती की जिंदगी जीने का एहसास	22
9.	लड़की से दोस्ती करने का एहसास	26
10.	टॉपर बनने का एहसास	28
11.	दूसरा पड़ाव	31
12.	पढ़ने का एहसास	33
13.	बेस्ट फ्रेंड से मिलने का एहसास	36
14.	गर्लफ्रेंड से मिलने का एहसास	39

Sample Copy Not For Distribution.

15.	घर से दूर रहने का एहसास	43
16.	एक एहसास 18 का	45
17.	माता–पिता से बिछड़ने का एहसास	48
18.	अपना सब कुछ लुटा कर शांति का एहसास	50
19.	तीसरा पड़ाव	52
20.	स्ट्रगल जिंदगी और कामयाबी का एहसास	54
21.	प्यार पाने का एहसास	65

Sample Copy Not For Distribution.

Sample Copy Not For Distribution.

1

दुःखों का एहसास

"दुःख, दर्द, तकलीफ एक
मुश्किल मुकाम है,
इसको पार करना ही जिंदगी
जीने का नाम है।"

रात.....

भयानक रात.....

काला अंधेरा, कड़कती हुई बिजली.....

और एक अधजन्मे बच्चे की कूड़े के ढेर से रोने की आवाज.....

तो बात उसी समय की है,जब एक अजान शिशु, उस अंधेरी रात में, उस कूड़े के ढेर में, एक गरीब असहाय बूढ़े व्यक्ति को मिलता है। और वह बूढ़ा व्यक्ति अपने कमजोर हाथों से उसे उस कूड़े के ढेर से उठाकर उस शिशु को अनाथ आश्रम में छोड़ देता है।

Sample Copy Not For Distribution.

कुछ दिनों तक वह नन्हा बालक बिना मां–बाप के, बिना प्रेम स्नेह के उस आश्रम में रहता है और वहीं उसकी उम्र 2 से 3 साल की हो जाती है। अब एक मध्यम परिवार के सदस्य उस अनाथ आश्रम में आते हैं और वह उस नन्हे बच्चे को बतौर गोद लेकर चले जाते हैं। कुछ समय बीतता है और उस बच्चे का पालन–पोषण भली–भांति चलता है, **"पर कहते हैं ना जहां समाज आगे बढ़ने की सोचता है वही यह रूढ़िवादी धारणाएं उसे पीछे धकेलने की सोचते हैं।"** बिल्कुल वैसा ही, रुढ़िवादी धारणाओं के चलते जो घर में वृद्ध औरत होती है, वह उस बच्चे को और उसके मां–बाप को ताने सुना–सुना कर उन्हें जीने नहीं देती।

उस मासूम से बच्चे को हर समय मारने की कोशिश की जाती थी। कभी वह औरत उस पर गर्म चाय डाल देती थी, तो कभी उसको खूब मारती–पिटती थी। यह थी उस समय उस मासूम से बच्चे की हालत। पर जहां उसको वह वृद्ध औरत मारती थी, वही पूरा परिवार उस बच्चे से बहुत प्रेम करता था और उसके आ जाने से बहुत खुश था।

पर कहते हैं ना कि विधि के विधान को कौन समझ सकता है?

अक्समात् ही उसके दादा जी और पिताजी की मृत्यु हो जाती है। पूरा परिवार छिन्न–भिन्न हो जाता है। पूरे परिवार पर कहर सा टूट पड़ता है। लगता ही नहीं, कि कभी खुशी थी भी इस परिवार में।

घर में खाने तक के लाले पड़ जाते हैं।

वह बूढ़ी औरत, सनकी स्वभाव की उस लड़के की मां को किसी और के हवाले कर देती है। और उस शिशु को वह जालिम आदमी घर से निकाल देता है। उस

Sample Copy Not For Distribution.

एक एहसास...

समय उस मासूम से चेहरे की आयु सिर्फ 5 वर्ष की होती है।

उस समय एहसास को दुःखो का एहसास होता है।

Sample Copy Not For Distribution.

2

लोगों के अच्छे और बुरे होने का एहसास

"अजनबी सी राहों ने खुद से मिला दिया,
लोगों के अच्छे व बुरे होने का
एहसास करवा दिया।"

सच, कुछ तो बात थी उस बच्चे में। कुछ अलग सा था उस बच्चे में, जो वह जालिम व्यक्ति समझ नहीं पाया था। 5 वर्ष की आयु में वह बच्चा बहुत कुछ सीख चुका था और जिंदगी के अनछुए पड़ाव पार कर रहा था। कहने को तो 5 वर्ष का बच्चा प्रथम कक्षा में होता है पर इस बच्चे का दिमाग पांचवी कक्षा के विद्यार्थियों से भी तेज मालूम होता था।

घर से निकाले जाने के बाद बेसहारों सी जिंदगी व्यतीत करते हुए, वह बालक चलते चलते यूं ही ट्रेन में बैठ गया। ट्रेन भी अपनी गति पकड़ रही थी। बच्चे को एहसास नहीं था कि किस दुनिया में कदम रखने जा रहा है। उसकी एक नई ही दुनिया का चयन हो रहा

Sample Copy Not For Distribution.

था।वह बालक थोड़ा उदास,मायूस–सा बैठा बाहर खिड़की की तरफ देख रहा था। मौसम भी नया रूख ले चुका था। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो मौसम एक नया मोड़ लेने जा रहा है।

अपनी पुरानी यादों में खोए हुए, वह सोने ही वाला था कि, अचानक से टी.सी. का आगमन हुआ और उस मासूम से बच्चे से पूछा ...

बच्चे,

आप किसके साथ हो??

बच्चे ने बखूबी जवाब दिया,

"साहब" मैं किसी के साथ नहीं हूं, पर 1 दिन यह दुनिया मेरे साथ होगी।

इतनी अद्भुत बात सुनकर टी.सी. चौका की इतनी छोटी सी उम्र में बच्चे ने इतनी बड़ी बात कह दी। फिर उस बच्चे से टी.सी. द्वारा उसका नाम पूछा गया।

बच्चे ने बड़ी उत्सुकता से अपना नाम "एहसास" बताया और कहा कि एक दिन इस एहसास को यह दुनिया अपने एहसास में बिठा लेगी।

टी.सी. साहब उस लड़के से बहुत प्रभावित हुए और उसे अपने साथ ले गए। टी.सी. के पहले ही चार बच्चे थे और घर में एक और के लाए जाने से उसकी पत्नी आग बबूला हो गई और उसने अपने पति को कहा जहां से इस पाप को लाए हो उसे वहीं छोड़ आओ।

एहसास को यह बात बिल्कुल भी अच्छी नहीं लगी और वह वहां से भाग गया।

भागते–भागते बच्चा इतनी दूर निकल गया कि उसने कभी पीछे मुड़ने का नाम तक नहीं लिया। अब 5 साल का बच्चा भला कितने दिन तक भूखा रह सकता था।

Sample Copy Not For Distribution.

बच्चे तो बेचारे भगवान का रूप होते हैं....

उन्हें नहीं मालूम होता कि इस मतलबी दुनिया में किस तरह रहा जाता है। बच्चा भागते–भागते जिस गांव में पहुंचा वहीं पास में एक विद्यालय में एक प्रतियोगिता आयोजित थी और उसमें कुछ खाने पीने की सटाल लगी हुई थी, तो बच्चा अपनी भूख शांत करने के लिए और मन भावक **चार्ट–पकोड़े** को देखकर स्कूल में चला जाता है। बच्चा वहां देखता है कि कैसे एक आदमी के लिए इतनी तालियां बज रही है। उस अकेले व्यक्ति का इतना सम्मान हो रहा है। बच्चा मन में ठान लेता है कि 1 दिन ऐसा आएगा, जब लोग उसके लिए भी तालियां बजाएंगे।

फिर बच्चे की भूख और बढ़ने लगी और वह जैसे ही कुछ स्टाल से उठाकर कुछ खाने की कोशिश करता है, उतने में स्टाल के मालिक तेज तेज चिल्लाते हुए उसे चोर–चोर कहने लगते हैं और वह बच्चा भयभीत होकर बड़ी मासूमियत से कहता है,,

'भैया', मैं चोर नहीं हूं। मैं तो बस अपनी पेट की भूख शांत कर रहा था।

पर वह दुकानदार उसकी एक नहीं सुनता। और जैसे ही वह दुकानदार उस को प्रताड़ित करने के लिए अपना हाथ उठाता है, इतने में ही विद्यालय के प्रधानाचार्य वहां पहुंच जाते हैं और उस बच्चे से पूछते हैं...क्या हुआ बेटा??

क्यों चोरी कर रहे हो?

और तब वह बच्चा जवाब देता है,

श्रीमान, मैं कोई चोर नहीं हूं। मैं तो बस अपनी पेट की भूख मिटा रहा था।

तब प्रधानाध्यापक पूछते हैं।

बेटा कौन हो तुम?

Sample Copy Not For Distribution.

कहां से आए हो?

तब वह बच्चा कहता है, **'सर' मेरे घर वालों ने मुझे घर से निकाल दिया है और मैं भटकता हुआ यहां तक पहुंचा हूं।**

प्राध्यापक बहुत ही दरियादिल इंसान थे और उन्होंने उस लड़के को अपने ही विद्यालय में पढ़ाने की ठान ली। उस वक्त एहसास बहुत खुश हुआ।

और मात्र 5 वर्ष की आयु में उसे लोगों के अच्छे व बुरे होने का एहसास हुआ।

Sample Copy Not For Distribution.

3

दोस्ती करने और निभाने का एहसास

"रहमत की जिंदगी में
कुछ नए रंग आ गए,
दोस्ती करने और निभाने के
सलीके सिखा गए।"

धीरे–धीरे एहसास बड़ा होने लगा। प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण करने के बाद, जब दूसरी श्रेणी के लिए वह कक्षा में प्रस्थान करता है, तो देखता है की पहला बैंच खाली है। जैसे ही वह उस पर बैठने के लिए कदम बढ़ाता है तो उसी समय एक भोलू नाम का विद्यार्थी वहां आ जाता है और कहता है कि ठहरो, यह मेरी सीट है। मैं यहां हर रोज बैठता हूं।

तब वह 6 साल का बच्चा क्या बखूबी जवाब देता है कि–**"मेरे दोस्त सीट बैठने से नहीं, बनाने से मिलती है।"**

उसकी यह बात सुनकर भोलू को गुस्सा आ जाता है और उससे लड़ने का प्रयास करता है, पर एहसास अपनी

Sample Copy Not For Distribution.

सूझ–बूझ से उसको हर बार शांत कर देता है, और बिना लड़ाई झगड़ा किए वह पीछे बैठ जाता है।

जैसे ही कक्षा में अध्यापक का प्रवेश होता है, सभी बच्चे उन्हें प्रणाम करते हैं और बैठ जाते हैं। अध्यापक कक्षा में कुछ प्रश्नों की चर्चाएं करते हैं और बच्चों से सामाजिक ज्ञान पर कुछ सवाल भी पूछते हैं। परंतु कोई बच्चा उन प्रश्नों का जवाब देने में समर्थ नहीं हो पाता और अंत में वह 6 साल का बच्चा ही सभी प्रश्नों के उत्तर बखूबी देता है।

अध्यापक उस से प्रसन्न होकर उसे कक्षा का मॉनिटर नियुक्त कर देते हैं। और उसे भोलू के साथ प्रथम बेंच पर बैठने के लिए कहते हैं। बच्चा बहुत खुश हो जाता है और भोलू के भी बात समझ आ जाती है कि **'हां–वाकई कुछ बात है इसमें'** और उससे माफी मांगते हुए दोस्ती करने की पहल करता है।

जब एहसास को पहली बार दोस्ती का एहसास होता है।

वह साथ में खूब खेलते हैं, साथ में पढ़ते लिखते हैं और कुछ ही दिनों में वह दोनों बहुत अच्छे दोस्त बन जाते हैं। अनाथ होने की वजह से एहसास विद्यालय में ही रहता था और भोजन की व्यवस्था प्राध्यापक ने की हुई थी। धीरे–धीरे एहसास और भोलू इतने करीब हो जाते हैं की अक्सर एहसास उनके घर चला जाता था। भोलू के माता–पिता एहसास को बहुत प्यार करने लगते हैं। पेशे से भोलू के पिता जी इंस्पेक्टर थे, तो उनका कहीं तबादला हो जाता है और भोलू अपनी दूसरी कक्षा की पढ़ाई खत्म करके एहसास को छोड़कर चला जाता है।

उस दिन एहसास खूब रोता है।

Sample Copy Not For Distribution.

और उस वक्त एहसास को दोस्ती करने और निभाने का एहसास होता है।

Sample Copy Not For Distribution.

एक एहसास...

Get Complete Book
At Educreation Store
www.educreation.in

Sample Copy Not For Distribution.

एक एहसास...

मैं "हनी गुप्ता" चरखी दादरी (हरियाणा) निवासी आप सभी पाठकों को तहदिल से आभार व्यक्त करता हूं। आप सभी की ही बदौलत मैं कुछ लिखने योग्य हो पाया हूं।

मेरा मानना है कि –

'एहसास' उस खुदा की दी हुई एक ऐसी अनमोल भेंट है, जो हर व्यक्ति महसूस करना चाहता है।

उन्हीं एहसास के कुछ पलों को छूकर मैंने अपनी लेखनी आप लोगों तक पहुंचानी चाही है।

नसीब मेरा मुझसे क्यों खफा हो जाता है,
अपना जिसको भी मानो बेवफा हो जाता है।

क्यों न हो शिकायत मेरी नजरों को रात से,
सपना पूरा होता नहीं और सवेरा हो जाता है।।

लेखक से संपर्क के लिए :
✉ hunnygupta1996@gmail.com

EDUCREATION
PUBLISHING (Delhi)
www.educreation.in

Also available as an eBook
FICTION
ISBN 978-1-61813-898-9
9 781618 138989 >

Sample Copy Not For Distribution.